विचार बिन्दु

मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं।

–रामदास

हर घर तिरंगा अभियान लोगों को भाईचारे के धागे से जोड़े

भारत के लोग इस बार देश की आज़ादी की 75वीं सालगिरह के जश्न मना रहे हैं। केंद्र सरकार ने इस जश्न को आज़ादी का अमृत महोत्सव नाम दिया है। इस जश्न को मनाने के लिए सभी राज्य सरकारें भी अपने-अपने स्तर पर जुटी हैं। स्वतंत्रता दिवस के इस उत्सव में बड़े पैमाने पर जन भागीदारी बनाने के लिए प्रधानमंत्री ने हर घर तिरंगा अभियान की घोषणा की है। इस अभियान के तहत प्रधानमंत्री ने देश के नागरिकों से 13 से 15 अगस्त के बीच हर घर पर तिरंगा फहराने का आव्हान किया है। उनके मुताबिक इस अभियान से नागरिकों का तिरंगे के साथ रिश्ता और गहरा होगा हम भारत के लोग, जिन्होंने अपने आप को गणतांत्रिक संविधान दिया, जिन्होंने अपने आजाद मुल्क के लिये तिरंगा झण्डा अपनाया, जिन्होंने देशभक्ति की भावना और प्रबल होगी। 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटेन के ध्वज यूनियन जैक का उतरना और तिरंगे का फहराया जाना कोई रस्म अदायगी नहीं थी, वह इतिहास की करवट थी। इस झंडे के नीचे पूरा भारत और उसके सभी नागरिक बिना किसी भेद के आपसी सद्भाव के ताने-बाने में बुन गये थे। आज़ादी का अमृत महोत्सव वह समय है जब देश जवान होने लगा है। आज इसके नागरिकों में पहले से अधिक आत्मविश्वास है। वे अपनी मुट्ठी में अपनी तकदीर लिये आसमान की ऊंचाइयां छूने को तत्पर हैं। भले ही 75 वर्ष की यात्रा गणतंत्र भारत में जबरदस्त चुनौतियां, बाधाएं और मायूसियां भी रही मगर उसके कदम रुके नहीं। महोत्सव की सच्ची सफलता तभी होगी जब हमारे पूर्वजों ने आज़ादी की जंग में जैसा देश और समाज बनाने का सपना देखा था वह पूरा हो सके और महोत्सव के उल्हास में हर घर झण्डा फहरा कर यदि वह सपना साकार करने के लिए नई पीढ़ी को फिर से संकल्पबद्ध किया जा सके।

राष्ट्रीय ध्वज किसी भी देश की एकता, अखंडता, अस्मिता, गौरव और यहां के नागरिकों के आत्मसम्मान का प्रतीक होता है। वह देश को राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित करता है। बड़े-बड़े सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन किसी न किसी झंडे के नीचे ही होते आये हैं। मगर समूचे हिंदुस्तान का कभी एक झण्डा नहीं रहा। सभी रियासतों के अपने अपने अलग-अलग झंडे होते थे। अंग्रेजों के राज में ब्रिटेन का राष्ट्र ध्वज यूनियन जैक फहराता रहा किन्तु 1857 की सैनिक क्रांति के बाद पहली बार अपने साम्राज्य के इस देश के लिए अलग ध्वज बना कर यहां के लोगों को उससे जोड़ने की कोशिश की। इस ध्वज में ऊपर कोने पर यूनियन जैक तथा नीचे हिंदुस्तान का प्रतीक सूर्य का चिन्ह अंकित था। 1880 से 1947 तक यह ध्वज अविभाजित हिंदुस्तान का प्रतिनिधित्व करता रहा। आज़ादी की सुबह इसकी जगह संविधान सभा द्वारा अंगीकृत ध्वज ने स्थान लिया। 26 जनवरी 1950 को बीच में चक्र वाला यही तिरंगा गणतांत्रिक भारत का राष्ट्रीय ध्वज बना। मगर झंडा हमारे यहां हमेशा सत्ता के रुतबे का प्रतीक ही रहा। उसे श्रद्धा युक्त भय के साथ देशाहंकार के लिए उपयोग किया जाता रहा। आमजन के लिए वह सम्माननीय तो रहा मगर एक दूरी के साथ। लंबे समय तक माना जाता रहा मानो आम नागरिक के हाथ में आने से उसकी मर्यादा भंग हो जायेगी। इसलिए राष्ट्रीय ध्वज के साथ भारत के नागरिकों का व्यक्तिगत से ज़्यादा औपचारिक और संस्थागत रिश्ता ही अधिक रहा है। यही माना जाता रहा कि झण्डा फहराना तो मंत्रियों और बड़े अफसरों को ही शोभा देता है और वह अधिकार का प्रतीक है। हर घर तिरंगा अभियान के बाद ये मिथक टूटेगा और आम नागरिक के राष्ट्रीय ध्वज के साथ संबंध ज़्यादा व्यक्तिगत हो सकने की उम्मीद की जा सकती है।

राष्ट्रीय ध्वज को हर घर पर फहराने के अभियान तक पहुंचने में हमें एक लंबा सफर तय करना पड़ा है जिसके दौरान कुछ ज़िद्दी नागरिक झण्डा फहराने का हक़ हासिल करने के लिए लड़ते हुए देश की सर्वोच्च अदालत तक गये हैं और न्याय पाया है। 23 जनवरी 2004 को, सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली उच्च न्यायालय के 22 सितंबर 1995 के फैसले और आदेश के खिलाफ भारत संघ द्वारा दायर दीवानी अपील को खारिज कर दिया और माना कि संविधान के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता वाले अनुच्छेद 19 (1) (ए) के तहत राष्ट्रीय ध्वज फहराना अभिव्यक्ति का प्रतीक है और नागरिक का अधिकार भी। सुप्रीम कोर्ट ने पाया कि प्रथम दृष्टया उन्हें कोई कारण नहीं दिखता कि इस देश के नागरिक राष्ट्रीय ध्वज को प्रदर्शित करके क्यों देशभक्ति व्यक्त नहीं कर सकते!

प्रधानमंत्री ने लोगों से हर घर तिरंगा फहराने के साथ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपने खातों की प्रोफाइल पिक्चर के रूप में तिरंगा लगाने का भी आग्रह किया है जिसका असर नज़र भी आने लगा है। राष्ट्रीय ध्वज का यह उत्सव देश के सभी नागरिकों को आपस में मानवीय भाईचारे के धागे से जोड़ने में सफल होता है तो वह देश के लिए बड़ी सौगात होगी जिसकी आज बेहद जरूरत है।

इसी के चलते आम नागरिकों को अपने ही ध्वज से दूर रखने वाली ध्वज संहिता में सरकार को बदलाव करने पड़े। हमारे देश में कोई भी मुद्दा हो उस पर विवाद न उठे यह संभव ही नहीं है। अनेक बार विवाद अनुचित भी नहीं होते है। ऐसा ही एक विवाद सरकार द्वारा पिछले साल 30 दिसंबर को राष्ट्रीय ध्वज संहिता में किये संशोधन पर हुआ है। इसके पहले तक तिरंगा हाथ से काते गये और हाथ से बुने हुए खादी के कपड़े का ही हो सकता था। अब यह छूट दे दी गई है कि राष्ट्रीय ध्वज हाथ की कती बुनी खादी के अलावा मशीन द्वारा सूती/पॉलिएस्टर/ऊनी/सिल्क के कपड़े से भी बनाया जा सकता है। इसका विरोध गांधीवादी संस्थाएं और लोग कर रहे हैं। उनका वाजिब तर्क है कि खादी कोई उद्यम नहीं एक विचार है खादी ने करोड़ों लोगों को आर्थिक संबल और आत्मसम्मान देकर उन्हें विकास की धारा से जोड़ा है। हाथ से कते और बुने कपड़े से तिरंगे का निर्माण हमारी विरासत है जिसे यह संशोधन ध्वस्त करता है। मगर नई तकनीक जनित तथा बाज़ार पोषित अर्थव्यवस्था में ऐसी बातें टिकती नहीं। ऐसे में खादी के विचार के साथ समाज में काम करने वालों पर अधिक जिम्मेवारी आ गई है कि वे आम नागरिकों में यह भावना प्रबल बनाये रखें कि वे अपने घरों पर फहराने के लिए खादी से बने झंडे को प्राथमिकता देंगे। उन्हें भी मशीन से बने झंडों के प्रति वैसा ही लचीला रुख अपनाना होगा जैसा संविधान सभा ने स्वतंत्र हो रहे देश के लिए राष्ट्रीय ध्वज को अंगीकार करते हुए अपनाया। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अशोक चक्र वाली तिरंगे को अपनाने का जो संकल्प रखा उसमें कहा गया कि झंडे की चौड़ाई से लंबाई का अनुपात सामान्यत: 2:3 होगा। नेहरू ने अपने भाषण में इसमें लिखे सामान्यत: शब्द को रेखांकित किया और कहा कि उसमें अवसर और स्थान के अनुरूप लचीलापन हो सकता है। हमारे संविधान निर्माता रूढ़िवादी नहीं थे और परिवर्तन के लिए सदैव तत्पर थे। भारत की स्वतंत्रता से कुछ दिन पहले 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने राष्ट्रीय ध्वज पर चर्चा के दौरान एक सदस्य एच.वी. कामथ ने ध्वज के बीच चक्र के अंदर स्वास्तिक को शामिल करने के लिए संशोधन प्रस्ताव पेश किया था। उनका कहना था कि चक्र के अंदर स्वास्तिक अंकित हो जाने से स्वास्तिक चिन्ह के रूप में अशोक के धर्म चक्र के साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रतीक भी जुड़ जाएगा। किन्तु बाद में उन्होंने यह कहते हुए अपना संशोधन प्रस्ताव वापस ले लिया कि उन्हें महसूस होता है कि स्वस्तिक को ध्वज के डिजाइन में शामिल करने से यह घिच-पिच लगेगा। जिस प्रकार भारतीय संविधान उसके निर्माताओं ने लचीला बनाया वही भावना झंडे को अंगीकार करने में भी रही इसे भी समझना होगा।

नेहरू ने भारतीय ध्वज के लिए संविधान सभा में कहा यह ध्वज, जिसे मुझे आपके सामने प्रस्तुत पेश करने का सम्मान मिला है, किसी बादशाहत, साम्राज्य या प्रभुत्व का प्रतीक नहीं है। यह झण्डा सिर्फ हमारे लिए ही स्वतंत्रता का प्रतीक नहीं है बल्कि इसे देखने वाले प्रत्येक की स्वतंत्रता का प्रतीक है। नेहरू ने प्रस्ताव के साथ दो झंडे - एक रेशमी खादी का बना और दूसरा सूती खादी का बना - प्रस्तुत किये। जिण झंडों को संविधान सभा में नेहरू ने रखा उन्हें भारत की समस्त महिलाओं की ओर से हंसा मेहता ने यह कहते हुए भेंट किये थे कि यह ध्वज महान भारत का प्रतीक बने, यह हमेशा ऊंचा फहराता रहे, और दुनिया में फैले अंधकार में प्रकाश के रूप में काम करे। यह उसके साये में रहने वालों के लिए खुशियां लाये। इन दो ध्वजों को ऐतिहासिक धरोहर मानते हुए संविधान सभा ने उन्हें राष्ट्रीय संग्रहालय में सहेज कर रखने का संकल्प लिया।

संविधान सभा में राष्ट्रीय ध्वज को अंगीकार करने के प्रस्ताव पर हुई बहस में राजस्थान के नेताओं ने भी अपना नाम दर्ज कराया। जोधपुर के शेरे राजस्थान कहलाने वाले जयनारायण व्यास और उदयपुर के डॉ. मोहन सिंह मेहता ने प्रस्ताव का समर्थन करने वाले अकेले नेता थे जिन्होंने अपने भाषण में भारत की राजसी रियासतों का जिक्र किया और कहा कि वे देसी रियासतों की तरफ से भी प्रस्ताव का समर्थन करते हैं क्योंकि वे भी स्वतंत्र देश का अभिन्न अंग बने रहना चाहती हैं। जय नारायण व्यास ने कहा यह हमारा राष्ट्रीय ध्वज है जो सभी समुदायों - हिंदू, मुस्लिम, सिख और पारसी- सभी का है।

प्रधानमंत्री ने लोगों से हर घर तिरंगा फहराने के साथ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपने खातों की प्रोफाइल पिक्चर के रूप में तिरंगा लगाने का भी आग्रह किया है जिसका असर नज़र भी आने लगा है। राष्ट्रीय ध्वज का यह उत्सव देश के सभी नागरिकों को आपस में मानवीय भाईचारे के धागे से जोड़ने में सफल होता है तो वह देश के लिए बड़ी सौगात होगी जिसकी आज बेहद जरूरत है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

समानुभूति की ओट में कौन छिपा बैठा है?

डॉ. रामावतार शर्मा

अंग्रेजी भाषा में दो शब्द हैं - सिंपैथी एवं एंपैथी। इन शब्दों का हिंदी अनुवाद है - सहानुभूति एवं समानुभूति। दोनों ही भाषाओं में दोनों का अर्थ एक जैसा लगता है पर होता नहीं है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से तो दोनों में अच्छा खासा अंतर होता है। इन दोनों भावों को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि इन्ही के द्वारा हमारे जीवन में बड़े परिवर्तन आते हैं। जो लोग उपरोक्त भावों के जानकार होते हैं वे एक अदृश्य परदे के पीछे से पूरे देश या समाज को नियंत्रित करने की क्षमता विकसित कर लेते हैं। सहानुभूति वह भाव है जिसमें कोई व्यक्ति किसी की पीड़ा, हीनभावना या किसी और कष्ट को साझा करता है, उसकी पीड़ा से आहत होता है, उसको उस स्थिति से बाहर निकालने की कोशिश करता है। समानुभूति वह भाव है जिसमें एक व्यक्ति आपकी पीड़ा या भावना को समझता तो है पर यह जरूरी नहीं कि वह उसे साझा करे या उसके निवारण का उपाय बताने की सोचे।

जब हम मनुष्य के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हैं तो एक वर्ग आता है जिसे साइकोपैथ या मनोरोगी कहा जाता है। यहां इस बात को याद रखना ज़रूरी है कि मनोरोग और पागलपन में बहुत फर्क होता है। मनोरोग एक तरह का मनोविकार है जबकि पागलपन एक मानसिक बीमारी होती है। मनोविकार से ग्रसित व्यक्तित्व को समझना बहुत ही मुश्किल होता है क्योंकि ये लोग अक्सर कोई न कोई छद्म रूप धारण किए हुए होते हैं। मनोविज्ञान में तीन तरह के खतरनाक व्यक्तित्व माने जाते रहे है - मनोरोगी, मैकियावेली वादी और आत्ममोही। मनोरोगी (साइकोपैथ) व्यक्तित्व पश्चाताप विहीन हिंसा करता है। इटली के दार्शनिक मैकियावेली ने धूर्तता एवं दगाबाजी को शासन प्रणाली का अहम हिस्सा बताया था। इस श्रेणी में आने वाला व्यक्ति शक्ति या शासन पाने के लिए झूठ और निष्ठुरता को अपना काम निकालने का साधन बनाता है, सत्ता पाने के लिए किसी की भी बलि चढ़ा सकता है। तीसरा व्यक्तित्व आत्ममोही अपने ही सपनों की दुनिया में रहता है, दूसरों की समस्याओं को अनदेखा कर आत्ममुग्ध रहकर चारों तरफ की पीड़ा और अव्यवस्था को नकारता हुआ काल्पनिक अच्छे समय को यथार्थ मानता है। वह अपने हर निर्णय को सही मानता है और विरोध करने वालों को अपने समर्थकों से प्रताड़ित करवाता है। इन तीनों तरह के मनोविकारों को निष्ठुर तिकड़ी या डार्क ट्रायड कहा जाता है। इन तीनों तरह के व्यक्तित्वों में दूसरे की भावनाओं को समझने का कोई प्रयास नहीं होता है, सब कुछ स्वकेंद्रित होता है।

तकनीकी विकास और शहरीकरण के कारण एक चौथा समूह भी बहुत तेजी से उभरा है जिसे समानुभूति कहते हैं वह भी होता है जिसमें ये लोग सामने वाले की मनोस्थिति को पूरी तरह से समझते तो हैं पर उसका उपयोग अपने हित के लिए करते हैं। लोगों की भावनाओं और डर का बड़े स्तर पर दोहन करते हैं। इन लोगों को डार्क एंपैथ या छद्म सहयोगी या श्यामल समानुभूति व्यक्तिव कहा जाता है। निष्ठुर तिकड़ी के लोग जहां छुप कर नुकसान पहुंचाते है, नेपथ्य में रहने का प्रयत्न करते हैं पर छद्म सहयोगी बहुत मुखर होते हैं। अपने आपको आक्रामक तरीके से जनहितकारी घोषित करते हैं, सपने बांटते हैं। ये लोग सामाजिक और धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं पर यदि इनके अपने हित पर आंच आए तो बहुत ही निष्ठुर और हानिकारक होते हैं। ये लोग सदा परोक्षरूप में ही हमला करते हैं। चूंकि ये हर तरह की मानवीय भावनाओं के प्रति सचेत होते हैं तो लोगों को अपनी विचारधारा में इस तरह से ढाल लेते हैं कि ठगे जा रहे लोगों को लंबे समय तक ठगाने में ही आनंद आता रहता है। इस तरह के छद्म पथप्रदर्शक लोग व्यक्ति, समाज या देश के लिए सदा नुकसानदेह होते हैं क्योंकि ये लोग छद्म व्यक्तित्व को सामाजिक सक्रियता, राष्ट्रीय गर्व, सांस्कृतिक महानता आदि के आवरण में ढके रखते हैं पर इनका प्रमुख उद्देश्य निष्ठुर स्वहित ही होता है।

निष्ठुर समानुभूति का एक उदाहरण चीनी नेता माओ त्से तुंग रहा है। वह चीनी लोगों की हीन भावनाओं और स्वघोषित सांस्कृतिक उच्चता की मन:स्थित को समझता था। उसनें चीनी लोगों की स्थिति के लिए बाकी बातों के अलावा कन्फ्यूशियस की शिक्षा को जिम्मेदार बताया हालांकि उस समय 98 प्रतिशत चीनी लोग साक्षर नहीं थे। अपने इस विचार की आड़ में उसने करोड़ों नागरिकों का कत्ल अपनी ही सेना या समर्थकों द्वारा करवाया। कंबोडिया का पोल पॉट भी इसी श्रेणी में आता है। एक और बड़ा उदाहरण हिटलर है जिसने पूरी जर्मन जनता को एक बड़े भ्रम पर विश्वास दिला दिया कि विश्व में सिर्फ जर्मेनिक एवम् एंग्लो-सैक्सन जाति ही सर्वोत्तम हैं, बाकी एशियन, अफ्रीकन आदि उनके सेवादार होने चाहिए।

हिटलर ने इन जन भावनाओं को समझा और हार का सारा दोष मुख्यतया यहूदियों और कुछ साम्यवादियों को दिया, जबकि यहूदी जर्मनी की एक प्रतिशत से भी कम आबादी थे। उसने लोगों को विश्वास दिलाया कि यदि उसे सत्ता सौंप दी जाएगी तो वह जर्मन आत्म सम्मान को पुन: स्थापित कर देगा और जर्मनी के अच्छे दिन आयेंगे। आगे विश्व युद्ध द्वतीय में जो नर संहार हुआ वह सर्व विदित है।

मनोविज्ञान में श्यामल समानुभूति वाले लोगों को सबसे खतरनाक माना जाता है और आधुनिक समय में जब सूचनाओं का प्रवाह बहुत तीव्र गति से होता है तो ये लोग समूह में इकट्ठे हो कर वैश्विक स्तर पर प्रभाव डाल सकते हैं और यदि व्यक्तिगत स्तर पर बात देखी जाए तो कितने ही लोगों के जीवन कितनी ही तरह से प्रभावित हो सकते हैं। डार्क एंपैथ को पहचानना बहुत मुश्किल होता है और जब तक कोई पहचान पाए वह इतना स्थापित हो चुका होता है कि उसे पूरी तरह से जन मानस पटल से हटाना संभव नहीं है। आज भी चीन में माओ और जर्मनी में हिटलर की अच्छी खासी पकड़ है हालांकि लोग प्रत्यक्ष में स्वीकार नहीं कर रहे हैं। श्यामल समानुभूति का धर्म, राजनीति, अपराध और शारीरिक या आर्थिक शोषण में उपयोग होता रहा है और अब इसकी धार और पैनी हो गई है। आज हर मनुष्य को अपने आस -पास बैठे श्यामल समानुभूति व्यक्तित्व को पहचानने की जरूरत है वरना डार्क एंपैथ जीवन में अंधेरा फैला देगा।

डॉ रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक

आदिवासी दिवस पर कन्हैया दंगल में झूमे श्रोता

श्रीमहावीरजी (निस)। विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य में मंगलवार को शेखपुरा गांव में एक दिवसीय कन्हैया दंगल आयोजित किया गया, जिसमें गायक कलाकारों ने धार्मिक में पौराणिक कथाएं सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कन्हैया दंगल में कानापुरा कि पार्टी ने भक्त हरदौल व नल - दमयन्ती की कथा का मार्मिक वृत्तांत सुनाकर श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। वही आडा डूंगर की पार्टी ने शिव पार्वती विवाह का वृत्तांत सुनाकर श्रोताओं की खूब वाहवाही लूटी। गावी - मोहनपुरा की कन्हैया पार्टी ने सुदामा चरित्र का वृतांत सुनाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। इससे पूर्व आदिवासी समिति द्वारा बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर पुष्प चक्र अर्पित कर उन्हें नमन किया गया। इस मौके पर देश की आजादी के लिए बिरसा मुंडा के द्वारा दिए गए योगदान को याद किया गया।

- **शेखपुरा गांव में गायक कलाकारों ने धार्मिक में पौराणिक कथाएं सुनाईं**

उपसरपंच सुमन मीना ने बताया कि पूर्व में आदिवासी समाज कबीलो में रहकर जल जंगल एवं जमीन के संरक्षण में अपनी भूमिका निभाते थे। उसी भूमिका की मंगलवार को आदिवासी समाज को शपथ दिलाई गई। इस दौरान प्रधानाचार्य धीरसिंहमीना, राजेंद्र सिंह, संजय लकवाड़, उप सरपंच सुमन मीना, प्रहलाद मीना अध्यापक, बबलूमीना, फरेबी मीना ,सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

श्रीमहावीरजी में कन्हैया दंगल के दौरान कलाकारों ने प्रस्तुति दी।

विधायक डॉ. कृष्णा पूनिया के नेतृत्व में गौरव यात्रा निकाली

गांव नुहंद से लेकर चांदगोठी तक 22 किलोमीटर की आजादी गौरव यात्रा निकाली गई।

सादुलपुर, (निसं)। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर कांग्रेस पार्टी के द्वारा विधायक पद्मश्री डॉ कृष्णा पूनिया के नेतृत्व में गांव नुहंद से लेकर चाँदगोठी तक 22 किलोमीटर की पैदल यात्रा निकाली गई। वहीं आजादी गौरव यात्रा जैसे ही गांवों में पहुंची तो वहां पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं के द्वारा तिलक लगाकर और फूल मालाओं से यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। यात्रा गांव नुहंद से आजादी गौरव यात्रा रवाना होकर गांव बास गोविंद सिंह, भैंसली, नवां, गुडान होते हुए चांदगोठी तक 22 किमी की पैदल यात्रा की।

सादुलपुर विधायक पद्मश्री डॉ. कृष्णा पूनिया ने कहा कि देश को आजाद कराने में कांग्रेस पार्टी की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि गांधी परिवार ने देश की एकता व अखंडता के लिए बलिदान दिया। साथ ही कहा कि केन्द्र की मौजूदा सरकार लोगों का ध्यान असली मुद्दों से भटकाने का प्रयास कर रही है। आज जनता महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी से बेहाल है। इस दौरान चूरू जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष भंवरलाल पुजारी ने कहा कि मौजूदा माहौल में समाज को जोड़ने के लिए प्रयास किए जाने की जरूरत है और इस यात्रा के जरिये नफरत के खिलाफ संदेश दिया गया है।

साथ ही चूरू जिले के यात्रा समन्वयक सांवरमल महरिया ने कहा कि आज और आने वाली पीढियों को जानना चाहिए कि कितनी मुश्किल और कुर्बानियों के बाद देश को आजादी मिली थी। साथ ही विधायक डॉ कृष्णा पूनिया ने कहा कि अंतराष्ट्रीय खेल स्टेडियम, राजकीय कॉलेज, ट्रॉमा सेंटर, ऑक्सीजन प्लांट, कृषि महाविद्यालय, घर-घर पानी कनेक्शन, सिद्धमुख को तहसील बनवाने, हमीरवास को उपतहसील बनाने, नए उप स्वास्थय केन्द्र स्वीकृत करवाने, एसओजी चौकी स्वीकृत करवाने, सीएचसी के सभी प्रकार के चिकित्सक उपलब्ध कराने आदि विकास कार्य के बारे में विस्तार से बताया। इस दौरान ब्लॉक अध्यक्ष सतीश पूनिया, चूरू जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष भंवरलाल पुजारी, चूरू जिले के यात्रा समन्वयक सांवरमल महरिया, नगर अध्यक्ष पवन सैनी, नियाज मो, करतार टांडी, सीताराम प्रजापत, वेद प्रकाश रेड्डू, पूर्व सरपंच अशोक पूनिया, पार्षद हैदर अली, सुलेमान चौहान, रफीक पहाड खानी, संजय बुरडक, सिकंदर जाटू, हरपालू कुशाला सरपंच धर्मवीर कटारिया, विजेंद्र मेहरा हमीरवास, अरुण कोच, सुरेश भाटी, सहित हजारों कांग्रेसी कार्यकर्तागण आजादी गौरव यात्रा में शामिल थे।

बड़ोदरा से दिल्ली तक स्केटिंग यात्रा कर शहीदों को देंगे श्रद्धांजलि

गुजरात के बड़ोदरा से स्केटिंग यात्रा पर निकले अगस्त्य वालंद सैन का ब्यावर में श्री सैन समाज संस्थान एसोसिएशन स्वागत किया।

ब्यावर (निस) श्री सेन समाज संस्थान एसोसिएशन द्वारा 75 वें आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर बड़ोदरा गुजरात से स्केटिंग यात्रा करते हुए अगस्त्य वालंद सेन दिल्ली शहीद स्मारक पर पहुंचेंगे और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

संस्थान अध्यक्ष दिलीप बडगुर्जर ने बताया कि अगस्त्य वालंद सैन के जोधपुर रोड बाइपास पहुंचने पर श्री सैन समाज संस्थान एसोसिएशन के पदाधिकारियों व सदस्यों ने माला पहनाकर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए स्वागत किया। लगभग 1100 किलोमीटर की यात्रा करते हुए 15 अगस्त को अगस्त्य सैन शहीदों को शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि देंगे। सैन के साथ सहयोग के लिऐ 5 साथी फोर व्हीलर के साथ चल रहे हैं। श्री सेन समाज संस्थान एसोसिएशन के सदस्य व पदाधिकारी मौजूद रहे । स्वागत करने वालों में संस्थान अध्यक्ष बडगुर्जर, पार्षद रामनिवास सैन, महावीर प्रसाद मेवाडा, पुरूषोत्तम जयपाल, राकेश छापरवाल, सुनील हर्षवाल, मनीष हर्षवाल, कन्हैयालाल हर्षवाल, सुनील घोडलिया गहलोत, गोपाल छापरवाल, सुमित सेन, अशोक तंवर, मनीष बड़गुर्जर व अन्य सदस्य मौजूद रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 10 अगस्त, 2022

सावन मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र प्रात: 9:40 तक, प्रीति योग सांय 7:35 तक, तैतिल करण दिन 2:16 तक, चन्द्रमा दिन 2:58 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मेष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-कर्क, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग दिन 9:40 से आरम्भ होगा। आज मंगल वृष में रात्रि 9:12 पर प्रवेश करेगा। आज आखेटक त्रयोदशी और शिव पवित्रारोपण है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:11 तक, शुभ 10:54 से 12:32 तक, चर 3:49 से 5:27 तक, लाभ 5:27 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:04

मेष

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे और शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन

परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। आय में वृद्धि होगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

कन्या

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा और उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

धनु

मानसिक तनाव दूर होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे और योजनानुसार सम्पन्न होंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर

अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है और घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात मन:स्थिति में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मीन

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है।